# हुब मेहेबूब की

हुब मेहेबूब की आसिक प्यास ले, चाहे साफ सराब सुराई सका।
पीवते पीवते पिउ के प्याले सों, हुई हाल में लाल पी मस्त बका।।

दिल परस सरस भयो अर्स इलाही, दोऊ चुभ रहे दिल सों दिल मिल।
न्यारी ना होए प्यारी आप मारी, चल विचल ना होए वाहेदत असल।।

लगी सो लगी आतम अंदर लगी, यों अंतर आतम जगी जुदी न होए।
सरभर भई पर आतम यों कर, यो तेहे दिली मिली छोड़ सके न कोए।।

महामत दम कदम न छूटे इन खसम के, हुआ मोहोल मासूक का मेरे दिल मांहीं ।
एक अव्वल बीच आई सो एक हुई, आखिर एक का एक मोहोल बीच और नाहीं ।।